पाठ - 9

गौरैया

आइए सीखें - ■काव्य में गेयता एवं सरसता को समझना। ■ध्वन्यात्मक शब्दों के सौन्दर्य को समझना। ■काव्य के द्वारा चित्रात्मक अनुभूति की समझ ■पुनरुक्ति एवं समान ध्वनि वाले शब्दों का प्रयोग। ■विशेषण-विशेष्य के प्रयोग की समझ। ■समानता दर्शाने वाले शब्दों की समझ।

मेरे मटमैले अँगना में,
फुदक रही गौरैया।

कच्ची मिट्टी की दीवारें,
घास-पात का छाजन।

मैंने अपना नीड़ बनाया,
तिनके-तिनके चुन-चुन।

यहाँ कहाँ से तू आ बैठी,
हरियाली की रानी।

जी करता है तुझे चूम लूँ,
ले लूँ मधुर बलैया।

मेरे मटमैले अँगना में,
फुदक रही गौरैया।

नीलम की-सी नीली आँखें,
सोने से सुन्दर पर।

अंग-अंग में बिजली-सी भर,
फुदक रही तू फर-फर।

फूली नहीं समाती तू तो,
मुझे देख हैरानी।

आजा तुझको बहन बना लूँ,
और बनूँ मैं भैया।

शिक्षण संकेत - ■आरोह-अवरोह के साथ कविता का वाचन कीजिए। ■हाव-भाव की सहज प्रस्तुति कीजिए।

मेरे मटमैले अँगना में,
फुदक रही गौरैया।

मटके की गरदन पर बैठी,
कभी अरगनी पर चल।

चहक रही तू चिऊँ-चिऊँ, चिऊँ-चिऊँ,
फुला-फुला पर चंचल।

कहीं एक क्षण तो थिर होकर
तू जा बैठ सलोनी।

कैसे तुझे पाल पाई होगी,
री तेरी मैया।

मेरे मटमैले अँगना में,
फुदक रही गौरैया।

सूक्ष्म वायवी लहरों पर,
सन्तरण कर रही सर-सर।

हिला-हिला सिर मुझे बुलाते,
पत्ते कर-कर मर-मर।

तू प्रति अंग-उमंग भरी-सी,
पीती फिरती पानी।

निर्दय हलकोरों से डगमग,
बहती मेरी नैया।

मेरे मटमैले अँगना में,
फुदक रही गौरैया।

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' मध्य प्रदेश के स्थापित लेखको में से एक हैं। सुमन जी ने दस काव्य संग्रह दो आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं अनेकों संस्मरण तथा विपुल मात्रा में निबन्ध रिपोर्ताज आदि की रचना की है।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

गौरैया	-	नीड़	-	सलोनी	-	वायवी	-
सन्तरण	-	हलकोरों	-	अरगनी	-	पर	-

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) गौरैया की आँखों और परों की तुलना किससे की गई है?

(ख) गौरैया अपना घोंसला कैसे बनाती है?

(ग) गौरैया को हरियाली की रानी क्यों कहा गया है?

(घ) कवि अपनी बहन किसे बनाना चाहता है ?

2. गौरैया कैसे आँगन में फुदक रही है? (सही विकल्प चुनिए)

- साफ आँगन में
- बड़े आँगन में
- मटमैले आँगन में
- हरे-भरे आँगन में

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए -

- मैंने अपना नीड़ बनाया, तिनके-तिनके चुन-चुन।
- तू प्रति अंग-उमंग भरी-सी, पीती फिरती पानी।
- सूक्ष्म वायवी लहरों पर, सन्तरण कर रही सर-सर।

भाषा अध्ययन

आप जानते ही हैं कि पुनरुक्ति एवं समान ध्वनि वाले शब्दों के प्रयोग से कविता में गेयता और क्रमबद्धता आती है।

1. इस कविता में आए ध्वन्यात्मक एवं पुनरुक्ति वाले शब्दों की सूची बनाइए।

जैसे - चुन-चुन

2. **'नीली आँखें'** में **आँख** शब्द संज्ञा है। विशेषता बताने के लिए **'नीली'** विशेषण का प्रयोग किया गया है। संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है। कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए, फिर बताइए कि इसमें प्रयुक्त निम्नांकित विशेषण किस शब्द की विशेषता बता रहे हैं-

मधुर, मटमैला, सुन्दर, वायवी, निर्दय

3. नीचे दी गई तालिका में शब्द दिए गए हैं, इन शब्द समूहों में एक वस्तु की दूसरी वस्तु से समानता दर्शाई गई है। जैसे - **''नीलम-सी नीली आँखें''** - इसमें 'आँखों' की समानता 'नीलम' से की गई है। इसी प्रकार के अन्य शब्द तालिका में निहित है, उन्हें इसी प्रकार क्रम से लिखिए-

1.	आँखे	नीलम	सी	नीली
2.	रंग	सोना	सा	सुनहरा
3.	पर	सोने	से	सुन्दर
4.	मुख	चन्द्रमा	सुन्दर	सा
5.	आँखें	कमलकली	सुन्दर	सी
6.	बाल	से	चाँदी	सफेद

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

बिजली, आँख, वायु, सोना

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -

मधुर, सुन्दर, चंचल, सूक्ष्म

योग्यता विस्तार

- आपके घर आँगन या आसपास कौन-कौन से पक्षी दिखाई देते हैं। उनके नाम पता करिए।
- पशु-पक्षियों से सम्बन्धित अन्य कविताएँ याद करो और बाल सभा में सुनाइए।
- पता करो चिड़िया अपना घोंसला कहाँ-कहाँ बनाती हैं।
- चिड़िया का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए।

जो आँगन में पेड़ लगाए, उसके घर में चिड़िया आए।